International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में गठबंधन राजनीति की गतिशीलता

प्रो. पंकज कुमार[1], गौरव कुमार सिंह[2]

[1]राजनीति विज्ञान विभाग।, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग।, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सार

21वीं सदी के भारत ने गठबंधन राजनीति के युग की शुरुआत की है। खंडित जनादेश और राजनीतिक दलों के प्रसार ने आवश्यक बहुमत प्राप्त करने और सरकार बनाने के लिए गठबंधन को एक आवश्यकता बना दिया है। इस प्रकार, भारत में राजनीति के समकालीन विमर्श को समझने के लिए गठबंधन के गठन और टूटने का अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। यह पेपर भारतीय लोकतान्त्रिक राजनीति का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हुए गठबंधन सरकार के गठन के सिद्धांतों, प्रक्रिया एवम निर्णयों का विश्लेषण करते हुए गठबंधन सरकार के मजबूत और कमजोर पक्षों पर प्रकाश डालता है।

महत्वपूर्ण शब्द - लोकतान्त्रिक राजनीति, गठबंधन, चुनाव, अधिनायकवादी प्रवृत्ति

परिचय

निश्चित अवधि पर चुनाव किसी भी लोकतंत्र के लिए जनता की वैधता प्राप्त करने का सबसे बेहतर विधि है। चुनाव नागरिकों में राजनीतिक चेतना का कारण भी बनते हैं। आमतौर पर चुनावों में भाग लेने वाला मतदाता अपने प्रतिनिधि को चुनते समय अपने मुद्दों व हितों का ध्यान रखतें हुए अपने पसंदीदा उम्मीदवार को वोट देते हैं; और राजनीतिक दलों द्वारा भी मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान करने हेतु कई लोकलुभावन योजनाओं को लाने का दावा किया जाता है। राजनीतिक दल इनमें सफल भी होते हैं।

बहुमत पाने वाला राजनीतिक दल सत्ता पर काबिज होता है। गत कई वर्षों से यह प्रवृत्ति भी देखने को मिली है कि किसी एक राजनीतिक दल का स्पष्ट बहुमत होने के बावजूद भी अन्य सहयोगी दलों के साथ मिलकर सरकार बनाते हैं। अब चुनाव से पूर्व ही राजनीतिक दलों द्वारा गठबंधन कर लिया जाता है और चुनाव गठबंधन के साझा योजनाओं के मेनिफेस्टो पर लड़ा जाता है।

वर्तमान दौर में, गठबंधन भारतीय राजनीति की एक अनिवार्य विशेषता बन गई हैं, भले ही ये पहले अलग-अलग रूपों में मौजूद थीं।गठबंधन सरकार तब बनती है जब कोई एक पार्टी सरकार बनाने के लिए बहुमत वाली पार्टी होने की स्थिति में नहीं पहुंच पाती है और जब एक पार्टी चुनाव लड़ने और सरकार बनाने के लिए दूसरी पार्टी के साथ कुछ शर्तों पर सहमत हो जाते हैं। पार्टी गठबंधन चुनाव से पहले या चुनाव के बाद बनाया जा सकता है जिससे यह एक राजनीतिक अवधारणा बन जाती है। कैम्ब्रिज एडवांस्ड डिक्शनरी के अनुसार गठबंधन को "एक विशेष उद्देश्य के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों या समूहों का संघ, आमतौर पर सीमित समय के लिए" माना जाता है। जिसका अर्थ है कि दो या दो से अधिक राजनेताओं ने संवाद किया है और अपने कार्यों का समन्वय करने के लिए सहमत हुए हैं। (अप्पैया, **2008)**

भारतीय राजनीति में न तो कोई स्थायी दोस्त है और न ही कोई स्थायी दुश्मन। भाजपा और कांग्रेस पार्टी दोनों दलों द्वारा चुनावी तालमेल बैठाए जातें हैं जो कि एक विजयी गठबंधन का नेतृत्व करते हैं (वैष्णव, **2015)**

भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति

भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति को समझने के लिए हम इसे तीन चरणों में बांट सकते हैं और गठबंधन की राजनीति के उद्भव की परिस्थिति का भी विश्लेषण कर सकते हैं।

***पहला चरण*(1952-1967)**

1952 में देश में पहला आम चुनाव हुआ जिसमें 46% लोगों ने अपने मत का प्रयोग किया था। काँग्रेस पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आई, अधिकांश राज्यों में भी काँग्रेस की सरकार बनी इस चरण को काँग्रेस प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है। कई राजनीतिशास्त्री इस दौर में विचारों के स्तर पर भारतीय लोकतंत्र को निर्देशित लोकतंत्र की श्रेणी में रखते हैं। कांग्रेस की विचारधारा भारतीय राजनीति में अपनी जड़े जमा चुका था। पहले पिछड़े जाति आयोग के द्वारा जाति आधारित आरक्षण हेतु की गई सिफारिश को मंजूर न होने पाए इसके लिए काका कालेकर ने एड़ी चोटी की जोर लगाई। एक दलीय प्रभुत्व वाला यह चरण भारत में बहुदलीय व्यवस्था के उद्भव के लिए नर्सरी था क्योंकि सरकार और विपक्ष के रूप में कांग्रेस के ही विभिन्न गुट सक्रिय रहते थे। (यादव,**2014)**

द्वितीय चरण (1967-1990)

1967 के चौथे आम चुनावों में काँग्रेस केंद्र में काम चलाऊ बहुमत तो जुटा पाई लेकिन कई राज्यों में उसे अपनी सत्ता गंवानी पड़ी। पिछड़े समुदाय के लोगों ने बड़ी संख्या में इस चुनाव में भाग लिया और पहली बार कांग्रेस का सत्ता पर से एकाधिकार खत्म हुआ। इस चुनाव में कांग्रेस के दिग्गज नेता कामराज और इसके पाटिल भी चुनाव हार गए। हम यह मान सकते हैं कि कांग्रेसी प्रणाली का अंत इस आम चुनाव में हो गया। इस चरण में क्षेत्रीय नेताओं का उभार हुआ। 1969 में कांग्रेस का विभाजन भी हो गया; तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में पार्टी की संसदीय इकाई संगठन इकाई से पृथक हो गई। संगठन पर क्षेत्रीय नेताओं का कब्जा था। कामराज ने कांग्रेस को मजबूत बनाने के लिए प्रभावी नेताओं को संगठन के कामों में लगा दिया जिसे हम 'कामराज योजना' के नाम से जानते हैं। हालांकि,1971 के चुनाव में 'गरीबी हटाओ' किनारे के दम पर इंदिरा गांधी ने निर्णायक चुनावी जीत हासिल की।

राजनीतिक दायरे से बाहर रह रहे नए तबकों ने भी अपनी अपेक्षाओं , मांगों और आस्थाओं के साथ राजनीतिक दावेदारी प्रस्तुत करनी शुरु कर दी। कृषि कार्य और हस्तशिल्प के धंधों में लगा हुआ कृषक वर्ग जो शिक्षा और अन्य मामलों में उच्च जातियों से पिछड़ा हुआ था, अन्य निम्न जातियों से अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न होने का लाभ लेते हुए राजनीतिक सत्ता हेतु दावेदारी पेश की जिससे भारतीय राजनीति में कुछ नए दलों का उद्भव हुआ। जैसे तमिलनाडु में द्रविड मुनेत्र कषगम, उत्तर प्रदेश में भारतीय क्रान्ति दल व हरियाणा में विशाल हरियाणा पार्टी अस्तित्व में आई। उत्तर प्रदेश में पिछड़ों को मुख्य राजनीतिक धारा में प्रवेश देने की अगुवाई संयुक्त सोशलिस्ट दल ने की। भारतीय राजनीति का यह दौर लोकलुभावनवाद का रहा है। इंदिरा गांधी का गरीबी हटाओ का नारा, जनता पार्टी की अंत्योदय योजना, कृषि उत्पादों का वाजिब दाम दिलाने का वादा, कृषि कर्ज माफ़ी का वादा इसके उदाहरण हैं। भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति के इस दूसरे चरण को कांग्रेस विपक्ष प्रणाली कहा जा सकता है क्योंकि पहले दौर की तरह अब कांग्रेस अपने चुनावी सफलता को लेकर पूर्ण रुप से जीत हेतु आश्वस्त नहीं हो सकती थीं। कांग्रेस को विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं वाले राजनीतिक दलों से टक्कर मिल रही थी । एक वर्चस्व वाली पार्टी प्रणाली की जगह अब 'एक पार्टी की प्रमुखता की प्रणाली' ने ले ली। (यादव,2014)

दूसरे चरण में विभिन्न राज्यों से क्षेत्रीय दलों ने सत्ता प्राप्त करने हेतु चुनावी संघर्ष किया। दक्षिण में राजनीतिक सत्ता सवर्णों के हाथ से निकलकर कृषक वर्ग के पास चला गया जिस कारण वहां राजनीति के सामाजिक क्षेत्र का प्रसार हुआ जिसका असर उत्तर प्रदेश,बिहार व गुजरात पर भी पड़ा। 1975 का आपातकाल का दौर राजनीतिक संस्थाओं के कमजोर होने का सूचक है। मार्च 1977 में हुए आम चुनाव में कांग्रेस के खिलाफ़ प्रमुख गैर कांग्रेसी दलों ने मिलकर चुनाव लड़ा जिसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी प्रदेशों के 226 सीटों में से कांग्रेस को केवल 2 सीट पर ही विजय मिली।

ऑपरेशन ब्लू स्टार, इंदिरा गांधी की हत्या,सिख दंगा इस दौर की प्रमुख घटनाएं हैं। जनता को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से बाहर नहीं रखा जा सकता, यह तथ्य इस दौर ने साबित कर दिया।

तृतीय चरण(1990- अब तक)

भारतीय राजनीति का वर्तमान दूर 1990 के आसपास शुरू हुआ। सोवियत संघ के विघटन ने भारतीय राजनीति में समाजवादी विचार को चुनौती दी। इसी दौर में मंडल, मंदिर और मार्केट की राजनीति भी आई। भारतीय प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अगस्त 1990 में अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की सिफारिशों को लागू कर दिया तो वही संघ परिवार राम जन्मभूमि आंदोलन को लेकर पूरे भारत की राजनीतिक आबोहवा को प्रभावित कर रहा था जिसकी परिणति बाबरी मस्जिद के विध्वंस के रूप में हुई और तीसरा सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण से संबंधित था। बंद भारतीय अर्थव्यवस्था अब विदेशी पूंजी प्रवाह के लिए खुल चुकी थी। इन तीनों घटनाओं ने भारतीय राजनीति को बुनियादी रूप से परिवर्तित कर दिया। कम्युनिस्ट पार्टियां मंडल आंदोलन के बाद इस तथ्य को स्वीकार कर लिए कि भारत में सामाजिक असमानता के उद्भव का स्रोत जाति भी है। पश्चिम बंगाल में कम्युनिस्टों की सरकार ने औद्योगिक विकास के लिए विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए प्रयत्न किया। दूसरे राजनीतिक दलों ने भी अपने विचारधारात्मक सीमाओं में संशोधन किया। नब्बे का दशक राष्ट्रीय राजनीति में अस्थिरता का दौर है। इसी दौर में भाजपा अपने सहयोगी दलों के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन के रुप में राजनीतिक पटल पर सामने आई तो इसके पश्चात् कांग्रेस भी अपने सहयोगी दलों के साथ मिलकर यू पी ए के रुप में चुनाव लड़ी। (यादव,**2014**)

गठबन्धन

गठबंधन बहुदलीय सरकार की एक घटना है जहां कई दल सरकार चलाने के उद्देश्य से साथ आतें हैं। एक गठबंधन तब बनता है जब कई समूह सामान्य शर्तों पर एक दूसरे के साथ आते हैं और एक सामान्य कार्यक्रम या एजेंडे को परिभाषित करते हैं जिस पर वे काम करते हैं। भारत जैसे देश में गठबंधन सरकार हमेशा खींचतान और दबाव में रहती है; हालांकि पिछले दो आम चुनावों से राष्ट्रीय राजनीति के फलक पर इस प्रवृत्ति में परिवर्तन देखा गया है।

गठबंधन की राजनीति के सिद्धांतों को दो सेट में विभाजित कर सकते हैं जिनमें पहले सेट में दो सिद्धांत है-

1. शक्ति अधिकतमकरण का सिद्धांत
2. नीति आधारित सिद्धांत

ये गठबंधन प्रयोगों से संबंधित हैं और उनकी प्रकृति का पता लगाते हैं।

दूसरे सेट में निम्न दो सिद्धान्त आते हैं।

1. चुनावी प्रणाली सिद्धांत और
2. सामाजिक दरार सिद्धांत

सिद्धांत का दूसरा सेट पार्टी प्रणाली के सिद्धांतों से संबंधित है।

भारत में गठबंधन की राजनीति को समझने के लिए चुनाव प्रणाली और सामाजिक दरार सिद्धांत का समावेश महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि सीमित पश्चिमी सिद्धांत भारतीय गठबंधन की जटिलता, गतिशीलता और बहुलवाद की व्याख्या और विश्लेषण करने के लिए अपर्याप्त है।

शक्ति अधिकतमकरण सिद्धांत का मानना है सत्ता की मजबूरी में बने गठबंधन में प्रत्येक पार्टी गठबंधन के गठन / अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है और पार्टियों की संख्या जितनी कम होगी, प्रत्येक पार्टी को मिलने वाला लाभ उतना ही बड़ा होगा। लेकिन, नीति-आधारित सिद्धांतों में गठबंधन समान विचारधारा वाले दलों द्वारा बनाया जाता है जो वैचारिक पैमाने पर आसन्न होते हैं और प्रमुख मुद्दों पर असंगत नहीं होते हैं। इससे गठबंधन सहयोगियों की संख्या कम हो जाती है। शक्ति अधिकतमकरण सिद्धांत न्यूनतम विजेता गठबंधन प्रणाली के गठन की भविष्यवाणी करते हैं। दूसरी ओर, नीति आधारित सिद्धान्त न्यूनतम कनेक्टेड विनिंग(विजेता) गठबंधन के गठन की भविष्यवाणी करते हैं। हालांकि, एक तीसरी स्थिति भी है जहां एक छोटी पार्टी संख्या में महत्वहीन हो सकती है, लेकिन उसके पास बड़ी सौदेबाजी की शक्ति है और गठबंधन में इसकी उपस्थिति उसके अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। (गौतम,**2018**)

भारत जैसी बहुलता वाली चुनाव प्रणाली में, राजनीतिक दल वोटों और सीटों के अपने हिस्से को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं। यह एक गठबंधन को दीर्घकालिक चुनावी लाभ से अल्पकालिक शक्ति अधिकतमकरण की ओर ले जाता है। ऐसी प्रणाली में प्रतिस्पर्धा और संदेह काफी अधिक है क्योंकि राजनीतिक समर्थन में एक बदलाव किसी पार्टी को बढ़ा या नष्ट कर सकता है। सामाजिक दरार सिद्धांत का मानना है कि पार्टी प्रणाली समाज में मुख्य दरार को दर्शाती है।

भारत में पाए जाने वाले गठबंधन आम तौर पर चार प्रकार के होते हैं। (नारायण, 1972)

1. पहला प्रकार वह है जिसमें एक प्रमुख पार्टी और एक या एक से अधिक छोटे दल हैं जो गठबंधन से बाहर निकलने पर भी सरकार को नुकसान नहीं पहुंचा सकते हैं। पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चा गठबंधन इस प्रकार के गठबंधन का एक उदाहरण था।
2. दूसरा प्रकार समान भागीदारों में से एक है, जो केरल में प्रचलित है क्योंकि सामाजिक आर्थिक ताकतों को कांग्रेस और सीपीआई (एम) के बीच लगभग समान रूप से ध्रुवीकृत किया जाता है।
3. कई समान विचारधारा वाले दलों का एक संयुक्त मोर्चा मुख्य रूप से एक आम दुश्मन को दूर रखने के लिए बनाया जाता है। राज्यों में 1967 के आम चुनाव के बाद गैर-कांग्रेसी सरकारें इसका उदाहरण हैं।
4. एक राष्ट्रीय सरकार का गठन एक अभिभावी राष्ट्रीय संकट जैसे कि युद्ध या दुश्मन द्वारा आक्रमण का सामना करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन में चर्चिल सरकार। जब 1989 के चुनावों के बाद 'त्रिशंकु संसद' ने भारतीय लोकतंत्र को त्रस्त कर दिया, तो अटल बिहारी वाजपेयी ने कांग्रेस सहित राष्ट्रीय सरकार का विचार दिया।

भारत में गठबन्धन का उदय एवम इसकी सफलताएं व असफलताएं

अंग्रेजों के आगमन ने आधुनिक भारत के अभूतपूर्व राजनीतिक एकीकरण का नेतृत्व किया। इसने आधुनिक भारत में "विविधता में एकता" की अवधारणा की शुरुआत की। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने स्वतंत्रता के बाद भारत में राजनीति और सरकार पर कांग्रेस का वर्चस्व स्थापित किया। भारत एक बहु-जातीय, बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक समाज रहा है, औपनिवेशिक मिसालों ने भारत को "एकल पार्टी प्रभुत्व प्रणाली" (यादव, 1993) या "कांग्रेस प्रणाली" (कोठारी, 1962) बना दिया। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एकमात्र राष्ट्रीय पार्टी थी जिसने लोगों के बीच लोकप्रियता और सम्मान हासिल किया। इस पार्टी का निस्संदेह भारत में एक जनाधार और जमीनी आधार था। इसने 1952, 1957 और 1962 में लोक सभा के पहले तीन आम चुनावों के लिए लगातार शासन किया।

लेकिन, धीरे-धीरे जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि जैसे विभिन्न अंशों की जरूरतों और आकांक्षाओं ने भारत के विभिन्न राज्यों में कांग्रेस पार्टी के विकल्पों में शरण लेना शुरू कर दिया। इस प्रकार, राजनीतिक दलों की बढ़ती संख्या और खंडित चुनाव परिणामों ने गठबंधन सरकार को अपरिहार्य बना दिया। एक प्रणाली और एक पार्टी के रूप में कांग्रेस पार्टी का कमजोर होना (राज्य स्तर पर अपनी स्थानीय और क्षेत्रीय पार्टी बनाने वाले कांग्रेस पार्टी छोड़ने वाले नेता) विभिन्न समुदायों या क्षेत्र के लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने और स्वतंत्रता के समय दिखाए गए सपने को साकार करने में इसकी विफलता ने लोगों को न केवल कांग्रेस के विकल्प की तलाश करने के लिए मजबूर किया, बल्कि सबसे बड़ी सेवा प्रदान करने के लिए एक पार्टी बनाने के लिए भी प्रेरित किया। इससे राज्य स्तर पर राजनीतिक दलों का उदय हुआ।

इंदिरा गांधी के शासनकाल में उनके कुछ ऐसे व्यक्तिगत निर्णय थे जो अलोकतांत्रिक प्रवृत्ति के थे। आपातकाल का निर्णय उसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण था जो भारत के लोकतांत्रिक इतिहास पर एक धब्बा था। उस समय एक नारा प्रचलित हो गया था कि *इंदिरा इज इंडिया और इंडिया इज इंदिरा*। सरकार ने विपक्षी नेताओं राजनीतिक, सामाजिक कार्यकर्ताओं को जेल में बंद कर दिया। यही कारण है कि 1977 में सभी विपक्षी दल इंदिरा गांधी सरकार के खिलाफ एक साथ आए उन्होंने न केवल चुनावों में कांग्रेस को पराजित किया बल्कि भारत में केंद्र में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार बनाई। जैसा कि हम ऊपर द्वितीय चरण में यह वर्णन कर चुके हैं कि यह वो दौर था जब क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उद्भव हो रहा था। उत्तर भारत

में बहुजन समाजवादी पार्टी और अन्य दलों का उद्भव हुआ जिससे पिछड़ी और निम्न तबको का व्यवस्था में प्रतिनिधित्व बढ़ने लगा। कई राजनीतिकविदों ने भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की बढ़ती हुई भूमिका को लोकतंत्र के लिए मजबूती के रूप में देखा।

आमतौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि गठबंधन की सरकार निर्णय लेने में दुर्बल पड़ जाती है। एक राजनीतिक दल के बहुमत को मजबूत सरकार के रूप में देखा जाता है। किन्तु जब हम भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हैं तो यह देखते हैं पूर्ण बहुमत वाली सरकार के निरंकुश होने की संभावना ज्यादा रहती है लोकतांत्रिक संस्थानों के कमजोर होने की संभावना अधिक होती है तो वहीं दूसरी ओर दुर्बल सरकारें राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न करती हैं। लेकिन इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि दुर्बल सरकारों ने ऐसे निर्णय लिए हैं जिसने भारतीय लोकतंत्र को मजबूत किया है। विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार द्वारा पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण लागू करना, पीवी नरसिम्हा राव सरकार द्वारा आर्थिक सुधार की नीतियों को लागू करना इसके प्रमुख उदाहरण के रूप में देखे जा सकते हैं।

1990 का दशक राजनीतिक अस्थिरता के दशक के रूप में माना जा सकता है। 1999 में भारतीय जनता पार्टी अपने सहयोगी दलों के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के रूप में सत्ता में आई तो वही 2004 में काँग्रेस अपने अन्य सहयोगी दलों के साथ यू पी ए रूप में सत्ता में आई और यह वह दौर था जब लोक कल्याणकारी राज्य के लिए कुछ ऐसी पारदर्शी नीतियां बनी जिसने भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने का कार्य किया। मौलिक अधिकार के रूप में शिक्षा का अधिकार को दैनिक मान्यता देना, मनरेगा , किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की नीति एवं सूचना का अधिकार इसके प्रमुख उदाहरण हैं। सन 2009 से 2014 के मध्य यू पी ए के दूसरे के शासनकाल में कई घोटाले उजागर हुए जिसकी वजह से कांग्रेस को अपनी सत्ता गंवानी पड़ी और 2014 में बीजेपी नरेंद्र मोदी की अगुवाई में प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में आई हालांकि बीजेपी अपने सहयोगी दलों के साथ सत्ता में 2014 से अब तक कायम है। मोदी सरकार द्वारा कई नीतियां बनी जिसमें कुछ हद तक सफलता भी मिली लेकिन जनता के बुनियादी मुद्दे बेरोजगारी, किसानों की आत्महत्या व महंगाई पर अभी भी राहत नहीं मिली है।

अपने प्रचंड बहुमत के दम पर मोदी सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए जो दृढ़ राजनीतिक इच्छा का परिचायक भी है। पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक, जीएसटी लागू करना, नोटबंदी, कश्मीर से 370 की समाप्ति ये कुछ महत्वपूर्ण फैसले हैं जो मोदी सरकार अपने स्पष्ट बहुमत के दम पर ले सकी दूसरी तरफ राफेल घोटाला ,नीरव मोदी व विजय माल्या ललित मोदी द्वारा किए गए घोटाले भी सामने आए हैं। शिक्षा बजट में कटौती, उद्योगपतियों के कर्ज माफ किए गए हैं किसान अभी भी इन समस्याओं से जूझ रहा है। हालांकि सरकार द्वारा किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य हेतु ₹6000 वार्षिक सहायता किसानों को प्रत्यक्ष दी जा रही है जो कि अच्छी पहल है। फिर भी सरकार को इस क्षेत्र में अभी और ध्यान देने की जरूरत है।

निष्कर्ष

आजादी के बाद भारतीय लोकतंत्र में उतार और चढ़ा दोनों के दौर देखे हैं। जहां एक ओर मजबूत सरकारों ने देश हित में महत्वपूर्ण फैसले लिए तो वहीं दूसरी ओर अपनी सत्ता को बचाने और विपक्ष की आवाज को दबाने के लिए सरकार अधिनायकवादी प्रवृत्ति को अपनाने से भी नहीं चूकी; आपातकाल इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। परन्तु दुर्बल समझे जाने वाले गठबन्धन की सरकारों के निर्णयों ने भी भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने का काम किया है; पिछड़े वर्गों को आरक्षण देना, पंचायती राज्य को संवैधानिक दर्जा देना, आर्थिक सुधार इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

सन्दर्भ

1. Gautam, R. (2018). Politics In India: The Dynamics Of Formation Of Coalition Government. Impact: International Journal Of Research In Humanities, Arts And Literature (Impact: Ijrhal), 6, 167-172.
2. Appaiah, P. (2008). Coalition Government In India. Nda Vs Upa.
3. Malik, F. A., & Malik, B. A. (2014). Politics Of Coalition In India. Journal Of Power, Politics & Governance, 2(1), 1-11.

4. Basu, K., Biswas, S. D., Harish, P., Dhar, S., & Lahiri, M. (2016). Is Multi-Party Coalition Government Better For The Protection Of Socially Backward Classes In India? (No. 2016/109). Wider Working Paper.
5. Vaishnav, M., & Hintson, J. (2014). Coalition Math Could Matter Most In India's 2019 Election. Economic And Political Weekly, 49(39), 130-134.
6. Dubey, K. A(2014). Loktantra Ke Saat Adhyaya.(Eds). वाणी प्रकाशन